सामाजीकरण (Socialization)

सामाजीकरण एक ऐसी सामाजिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा एक जैविक प्राणी से सामाजिक प्राणी के गुणों का विकास होता है और वह सामाजिक प्राणी बनता है। इस प्रक्रिया के द्वारा व्यक्ति समाज और संस्कृति के बीच रहकर विभिन्न साधनों के माध्यम से सामाजिक गुणों को सीखता है, अतः इसे सीखने की प्रक्रिया भी कहते हैं।

सामाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से मनुष्य समाज के विभिन्न व्यवहार, रीति-रिवाज, गतिविधियाँ इत्यादि सीखता है। जैविक अस्तित्व से सामाजिक अस्तित्व में मनुष्य का रूपांतरण भी समाजीकरण के माध्यम से ही होता है। समाजीकरण के माध्यम से ही वह संस्कृति वह संस्कृति को आत्मसात करता है। समाजीकरण की प्रक्रिया मनुष्य का संस्कृति के भौतिक व अभौतिक रूपों से परिचय कराती है। सीखने की यह प्रक्रिया समाज के नियमों के अधीन चलती है।

समाजशास्त्र की भाषा में कहें तो समाज में अपनी स्थिति या दर्जे के बोध और उसके अनुरूप भूमिका निभाने की विधि को हम समाजीकरण के जरिए ही आत्मसात करते हैं। समाजीकरण व्यक्ति को सामाजिक रूप से क्रियाशील बनाता है। इसी माध्यम से संस्कृति के अनुरूप आचरण करने का विवेक विकसित होता है। इसके लिए व्यक्ति द्वारा सांस्कृतिक मूल्यों का जो अभ्यंतरीकरण किया जाता है वह

समाजीकरण का ही रूप है।

समाजीकरण की सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि यह जीवन पर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है। व्यक्ति की परिस्थिति व सामाजिक भूमिकाएँ बदलती रहती है और उनके अनुरूप व्यवहार के लिए उसे आचरण तथा व्यवहार के नये प्रतिमान सीखने पड़ते है। उदाहरण के लिए बचपन में जहाँ बच्चा समाजीकरण के माध्यम से माता-पिता, संबंधियो व बुजुर्गों से व्यवहार करना सीखता है, वही युवावस्था में उसे नये सिरे से दफ्तर में अपने सहयोगियों, वरिष्ठों, पड़ोसियों आदि से व्यवहार के तौर-तरीकों को सीखना पड़ता है। यहाँ तक कि वृद्धावस्था में भी व्यक्ति नयी भूमिकागत अपेक्षाओं के अनुसार संबंधित सामाजिक व्यवहार ग्रहण करता है। इस प्रकार समाजीकरण वह प्रक्रिया है जो जन्म से लेकर मृत्यु तक लगातार चलती रहती है।

मानव एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में रहता है और अपना विकास करता है। समाज के बिना उसका विकास संभव नही है तथा वह समाज की परंपराओं, विचारों रहन-सहन के तरीकों को अपनाता है। इस प्रकार से कहा जा सकता है यदि वह समाज के अनुसार अपना जीवन नही बीताता तो उसका समुचित विकास नही हो पाता। इस प्रकार वह समाज की परंपराओं और मान्यताओं को अपनाकर ही सामाजिक बनता है। इस प्रकार समाजीकरण का अभिप्राय सीखने की उस प्रक्रिया से है जो बालक के जन्म के बाद शुरू हो जाती है।